मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर के परिवारजनों के सविनय आग्रह पर दिनांक 22 अक्टूबर, 2009 को संस्थान परिसर में मुनिश्री विनयकुमार जी 'आलोक" का सुआगमन हुआ कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों व अधिकारियों को अध्यात्म, चरित्र-निर्माण, व्यक्तित्व विकास एवं समाज व राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों से मुनिश्री द्वारा बोध प्राप्त कराना था। कार्यक्रम का शुभारम्भ तेरापंथ महिला मंडल की स्वयंसेविकाओं द्वारा मंगलाचरण कर किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो॰ राजपाल दहिया ने मुनिश्री का भावभीना अभिनन्दन किया और विश्वास व्यक्त किया कि उनका मार्गदर्शन व आशीर्वचन आगे भी संस्थान को निरन्तर मिलता रहेगा।

व्यक्तित्व विकास विषय पर व्याख्यान प्रस्तुति में मुनिश्री ने शारीरिक व बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना व मनुष्य के चरित्र विकास पर मुख्य बल दिया। उपस्थित शिक्षकों से रुबरु होते हुये उन्होंने जहाँ एक ओर सरकार द्वारा शिक्षक समुदाय के लिये घोषित नये वेतनमानों पर खुशी व्यक्त की वहीं दूसरी ओर उनको "शिक्षकों के दायित्व व उनकी विद्यार्थी निर्माण में सही भूमिका" का भी बोध कराया। उन्होंने कहा कि "जितना आप लेते हैं- उसी अनुपात में व कहीं उससे भी अधिक आपको देना है॥" देने से उनका अभिप्राय: छात्र-छात्राओं को शिक्षित व प्रशिक्षित करने के साथ राष्ट्र के चरित्र-निर्माण में युवा पीढ़ी को तैयार करने से था। मुनिश्री के वक्तव्य का विद्यार्थियों ने हर्ष ध्वनि से स्वागत किया।

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर के परिवारजनों के सविनय आग्रह पर दिनांक 22 अक्टूबर, 2009 को संस्थान परिसर में मुनि श्री विनयकुमार जी 'आलोक" का सुआगमन हुआ कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों व अधिकारियो को अध्यात्म, चरित्र-निर्माण, व्यक्तित्व विकास एवं समाज व राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों से मुनिश्री द्वारा बोध प्राप्त कराना था। कार्यक्रम का शुभारम्भ तेरापंथ महिला मंडल की स्वयंसेविकाओं द्वारा मंगलाचरण कर किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो॰ राजपाल दहिया ने मुनिश्री का भावभीना अभिनन्दन किया और विश्वास व्यक्त किया कि उनका मार्गदर्शन व आशीर्वचन आगे भी संस्थान को निरन्तर मिलता रहेगा।

व्यक्तित्व विकास विषय पर व्याख्यान प्रस्तुति में मुनिश्री ने शारीरिक व बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना व मनुष्य के चरित्र विकास पर मुख्य बल दिया। उपस्थित शिक्षकों से रुबरु होते हुये उन्होंने जहाँ एक ओर सरकार द्वारा शिक्षक समुदाय के लिये घोषित नये वेतनमानों पर खुशी व्यक्त की वहीं दूसरी ओर उनको "शिक्षकों के दायित्व व उनकी विद्यार्थी निर्माण में महती भूमिका" का भी बोध कराया। उन्होने कहा कि "जितना आप लेते हैं- उसी अनुपात में व कहीं उससे भी अधिक आपको देना है॥" देने से उनका अभिप्राय: छात्र- छात्राओं को शिक्षित व प्रशिक्षित करने के साथ राष्ट्र के चरित्र-निर्माण में युवा पीढ़ी को तैयार करने से था। मुनिश्री के वक्तव्य का विद्यार्थियों ने हर्ष ध्वनि से स्वागत किया।

मुनिश्री ने संतोष प्रकट किया कि अभियांत्रिकी संस्थान में विद्यार्थियों को अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी शिक्षा के अतिरिक्त नैतिक शिक्षा दिलवाने का भी एक छोटा सा प्रयास किया जा रहा है।

अन्त में उन्होनें सभी श्रोताओं को यह शपथ दिलाई की ~~वह~~ "न कभी आत्म-हत्या करेंगे और न ही भ्रूण-हत्या में भागीदार बनेंगे"। छात्र-छात्राओं, शिक्षकगणों व अन्य सभी ने खड़े होकर मुनिश्री के समक्ष इस वचन को पूरा करने का भरोसा दिलाया।

प्रो० श्री गोपाल मोदानी ने मुनिश्री का ~~आभा~~ आभार व्यक्त किया और राष्ट्रभर में उनके द्वारा चलाये जा रहे जन-जागरण पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के आयोजन में संस्थान की सृजनात्मक कला समिति के समन्वयक प्रो० कमल-चन्द जैन, विद्यार्थी प्रभारी धीरज कुमार अधिष्ठाता प्रो० राजेन्द्र प्रसाद यादव एवं मंच संचालक सुश्री साक्षी गोयल का सराहनीय योगदान रहा।

प्रतिवेदक
(अशोक कुमार अग्रवाल)

→ आचार्य मुनिश्री विनय कुमार जी